Sant Ganinath

Mansaram lived with his wife on the banks of river Ganges in Mahanar of Vaishali district. They had no children. Mansaram was of pious thought. He used to worship Lord Shiva with utmost dedication along with his other social activities. Pleased with his devotion, Lord Shiva blessed him with a child. During a visit to the forest, Mansaram saw a unique supernatural, divine light coming out of the aura of a newborn (child). Mansaram took that child to his house. Everyone in the village was surprised by the influence of the divine power of the child. He started showing miracles from his childhood. After seeing these miracles, the people praised Lord Shiva and christened the boy as "Ganinath".

Ganinath was a brilliant student of sharp intellect. In Samvat 1024, Ganinath was admitted to Vikramshila University. Ganinath achieved mastery in eight 'Siddhis' and nine 'Nidhis' with austerity and yoga. A Yagya was organized on Baba's return. Baba Ganinath gave four teachings to the society. They are: study the Vedas; follow the truth and religion; abandon attachment, anger, greed, pride and laziness; respect& protect women's honor in society. Many people started to come to listen to Baba's messages. After the blessings of Baba, the suffering of people started to melt away.

Baba Ganinath married Raja Dhang's daughter Kshema. Like Baba Ganinath, Mother Kshema was very pious. The five children of Baba Ganinath were Raichandra, Shridhar, Govind, Sonmati and Shilmati respectively. Like Baba, five siblings were also proficient in Vedas, arms and Shastras.

After becoming Maharaj in 1060 Vikram Samvat, Baba Ganinath unified the states won by his ancestor kings, to establish self-government and order in them. With love, coexistence and compassion, he integrated all the states into a single state.

In order to liberate the society from Yavanas, Baba Ganinath formed an army which was administered by Raichandra and Shridhar. Yavanas were defeated in the fierce battle and influenced by Sant Ganinath, Sardar Lal Khan Baba, leader of Yavanas become his disciple and continued to serve him throughout his life.

Baba Ganinath and Mata Kshema took the samadhi together in Palvaiya Dham, which is situated in Hajipur District Vaishali as a grand temple.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Sant Ganinath.

Credits:-

Text : **Based on the information received from proponent**

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet : **Smt Alka Sharma**

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India
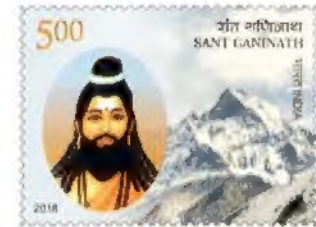
विवरणिका BROCHURE

संत गणिनाथ

वैशाली जिला के महनार में मंशाराम गंगा नदी के किनारे अपनी पत्नी के साथ रहते थे। इनकी कोई संतान नहीं थी। मंशाराम सात्विक विचार के थे। वे अपने अन्य सामाजिक कार्यों के साथ भगवान शिवजी की उपासना बड़े ध्यान मग्न होकर करते थे। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव के आशीर्वाद स्वरूप उन्हें एक नवजात बालक का वरदान मिला। मंशाराम एक दिन वन में विचरण करने गये तो वहाँ देखा कि एक नवजात शिशु (बालक) के आभा मण्डल से अद्वितीय अलौकिक, दिव्य शक्ति का प्रकाश निकल रहा है। मंशाराम उस बालक को अपने घर ले आये। बालक की दिव्य शक्ति के प्रभाव से सारे गाँव के लोग आश्चर्यचकित थे। उन्होंने बालक रूप से ही चमत्कार दिखाना शुरू कर दिया। बालक की विभिन्न लीलाओं को देखकर सभी लोगों ने भगवान शिव का जय जयकार किया और बालक का नाम गणिनाथ रखा।

गणिनाथ तीक्ष्ण बुद्धि के मेधावी छात्र थे। सम्वत 1024 विक्रमीय में गणिनाथ का नामांकन विक्रमशीला विश्वविद्यालय में कराया गया। गणिनाथ जी ने तपस्या और योग से आठ सिद्धि और नौ निधि पर महारथ प्राप्त किया। बाबा के वापस आने पर एक यज्ञ का आयोजन किया गया। बाबा गणिनाथ जी ने समाज को चार उपदेश दिए। वे हैं:– वेदों का अध्ययन करो, सच्चाई एवं धर्म का पालन करो, काम, क्रोध, लोभ, अभिमान और आलस्य का त्याग करो, समाज में नारी का मान सम्मान और उनकी रक्षा करो। बाबा के उपदेश आस–पास के सभी लोग सुनने आने लगे। बाबा का आर्शीवाद पाकर सभी लोगों का कष्ट दूर होने लगा।

बाबा गणिनाथ ने राजा धंग की पुत्री क्षेमा से विवाह किया। बाबा गणिनाथ की तरह माता क्षेमा भी धर्म की रक्षा करने वाली थी। बाबा गणिनाथ की पाँच संतानें क्रमशः रायचन्द, श्रीधर, गोविन्द, सोनमती, शीलमती थे। बाबा की तरह पाँचों भाई–बहन भी वेद, शस्त्र और शास्त्रों में प्रवीण थे।

विजय दशमी, सम्वत 1060 विक्रमीय में बाबा गणिनाथ ने महाराज बनने के उपरान्त अपने पूर्वजों के जीते हुए राज्यों को समेटने, उन्हें एकत्रीभूत करने, वहाँ स्वशासन तथा व्यवस्था स्थापित करने का यत्न किया। उन्होंने प्रेम, सह अस्तित्व एवं ममता का व्यवहार करके सभी राज्यों को एकछत्र राज्य में पुंजीभूत करने का कार्य किया।

पलवैया राज्य के बाहर यवनों का भी अत्याचार बढ़ रहा था। इन यवनों से समाज को मुक्ति दिलाने के लिए बाबा गणिनाथ ने एक सेना तैयार की जिसका संचालन रायचन्द्र और श्रीधर को सौंपा। इस भयंकर युद्ध में यवनों की हार हुई और यवनों का सरदार लाल खां बाबा की योग शक्ति से प्रभावित होकर ताउम्र उनका शिष्य बनकर उनकी सेवा करता रहा।

बाबा गणिनाथ एवं माता क्षेमा ने पलवैया धाम में एक साथ समाधि ली जो एक भव्य मंदिर के रूप में पलवैया धाम, हाजीपुर जिला वैशाली में स्थापित है।

डाक विभाग संत गणिनाथ पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

पाठ	: प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित
डाक-टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरूपण मोहर	: श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	3.0 लाख
Stamps Printed	:	3.0 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00